an>

Title: Need to frame rules and regulations for matrimonial websites.

श्री डी.एस.राठौड़ (साबरकांठा) : वÂाों पहले शादी-ब्याह वगैरह घर के बड़े लोग तय करते थे। अपने अनुभव और सामाजिक स्टेटस के हिसाब से अपने बेटे और बेटियों की शादी तय करवाते थे। पिछले कुछ समय से इनफोर्मेशन टेक्नोलॉजी की व्यापकता एवं पहुँच की वजह से यह पुराने रीति-रिवाज कम हो रहे हैं और बच्चे खुद ही मेट्रीमोनी वेबसाइट के माध्यम से अपने जीवन साथ को पसंद करने लगे हैं। समय के साथ यह सिस्टम अच्छा है लेकिन कुछ लोग इसका दुरूपयोग करते हुए खुद की गलत जानकारी देते हैं और शादी करते हैं जिसकी वजह से शादी के बाद निर्दोÂा लोग फंस जाते हैं।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि ऐसी प्राइवेट एजेंसियों के लिए कड़े कानून बनाए जाएं जिसमें अपराधी लोगों को कड़ी सजा का प्रावधान हो।